

पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड- XXXI अंक-07

15 अप्रैल, 2026



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

हिंदी कक्ष

<https://hindi.iitd.ac.in/>



मुख्य बिंदु

- नियुक्तियाँ
- त्यागपत्र स्वीकृत
- उच्च तकनीकी शिक्षा में बहुभाषिकता एवं युवा स्वर विषय पर 'बहुभाषी शिक्षा संवाद कार्यक्रम'
- जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल और समझने योग्य बनाने के लिए संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग द्वारा एक अनूठी कॉमिक बुक का विमोचन
- कविता
- गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-2027 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम

“उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।”

— स्वामी विवेकानंद

नियुक्तियाँ

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/68/2025-REGISOFFI/2242/2026 दिनांक 30 मार्च, 2026 के अनुसार निदेशक महोदय ने तत्काल प्रभाव से निम्नानुसार नियुक्तियाँ की है:

क्र. सं.	पद	संकाय सदस्यों के नाम एवं विभाग	कार्यकाल
1	संकायाध्यक्ष (कॉर्पोरेट संबंध)	प्रो. जयंत जैन पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग	03.04.2026 से आगामी 2 वर्ष तक
2	सह संकायाध्यक्ष (अनुसंधान एवं विकास)	प्रो. सुनील झा यांत्रिक इंजीनियरी	01.04.2026 से आगामी 2 वर्ष तक
3	अध्यक्ष क्यू.आई.पी. एवं सी.ई.पी./ टी.यू.क्यू.आई.पी./ ओ.सी.डी.सी.	प्रो. मनोजकुमार सी. रामटेके रासायनिक इंजीनियरी	01.04.2026 से आगामी 2 वर्ष तक
4	सह अध्यक्ष क्यू.आई.पी. एवं सी.ई.पी./ टी.यू.क्यू.आई.पी./ ओ.सी.डी.सी.	प्रो. अगम गुप्ता प्रबंध अध्ययन विभाग	01.04.2026 से आगामी 2 वर्ष तक

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. भा.प्रौ.सं.वि./स्था.-2/पर्स./27946/2026 दिनांक 05.03.2026 के अनुसार **श्री उत्कर्ष पाण्डेय**, प्रशासनिक सहायक (अंतरविद्याशाखायी अनुसंधान स्कूल) ने अपने पद से त्यागपत्र दिया था। श्री उत्कर्ष पाण्डेय को 10.03.2026 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. भा.प्रौ.सं.वि./स्था.-1/DIS/5354/2026 दिनांक 30.03.2026 के अनुसार **प्रो. नन्दना सेनगुप्ता**, सह प्रोफेसर (सार्वजनिक नीति स्कूल) ने अपने पद से त्यागपत्र दिया था। प्रो. नन्दना सेनगुप्ता को 05.04.2026 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

उच्च तकनीकी शिक्षा में

बहुभाषिकता एवं युवा स्वर विषय पर 'बहुभाषी शिक्षा संवाद कार्यक्रम'

संस्थान के हिंदी कक्ष द्वारा उच्च तकनीकी शिक्षा में बहुभाषिकता एवं युवा स्वर विषय पर 'बहुभाषी शिक्षा संवाद कार्यक्रम' का आयोजन दिनांक 27 मार्च, 2026 को सीनेट रूम में किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार में वरिष्ठ विशेषज्ञ के रूप में सेवारत प्रो. आर. एस. सराजू थे जिनका भाषा, साहित्य और अनुवाद में सृजन और अध्यापन का लंबा अनुभव रहा है और जिन्हें जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार समेत कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो. रंगन बनर्जी, उप निदेशक (प्रचालन) प्रो. अरविंद कुमार नेमा, कुलसचिव श्री अतुल व्यास तथा भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार से संबद्ध अकादमिक समन्वयक डॉ. गिरिधर राव की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए डॉ. स्वाती ठाकुर, हिंदी अधिकारी ने उपस्थित सभी सम्मानित जनों का स्वागत किया और कहा कि यह कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2026 के लिए यूनेस्को द्वारा निर्धारित थीम को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया जा रहा है। तत्पश्चात, डॉ. नीरज चौरसिया, अध्यक्ष, हिंदी कक्ष ने कार्यक्रम का परिचय देते हुए



कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य उच्च तकनीकी शिक्षण में बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करना है। उप निदेशक (प्रचालन) ने कहा कि हमारी भाषाई विविधता ही हमारी विरासत और शक्ति है और शिक्षण में बहुभाषिकता ज्ञान की पहुँच बढ़ाने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके पश्चात आमंत्रित वक्ताओं ने उच्च तकनीकी शिक्षा में बहुभाषिकता विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी रही कि इस कार्यक्रम में वक्ताओं के रूप में संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों के विद्यार्थी/शोधार्थियों ने प्रतिभागिता की। इस कड़ी में सर्वप्रथम श्री सत्यम प्रकाश, स्नातकोत्तर विद्यार्थी (सार्वजनिक नीति स्कूल) ने कहा कि भाषा और शिक्षा सहजीवी हैं, एक निश्चित बहुभाषी शिक्षा मॉडल अपनाने से क्षेत्रीय भाषाओं के विद्यार्थियों को सीखने में सहायता होगी, नीति निर्माण में लाभ होगा एवं अनुवाद पर निर्भरता कम होगी। सुश्री शुभांजली कोरी, शोधार्थी (ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र) ने अपने निजी अनुभव के माध्यम से शिक्षण क्षेत्र में अंग्रेज़ी की प्रधानता की बात कही और कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से संपर्क बनाना सरल हो जाता है। श्री साहिल ललित, शोधार्थी (एन.सी.वी.ई.ई.) ने कहा कि शिक्षण क्षेत्र में अनुवाद करने से कई बार भाषा में जटिलता और क्लिष्टता आ जाती है, इस समस्या से निपटने में बहुभाषिक शिक्षण और त्रिभाषा सूत्र सहायक सिद्ध

होते हैं। श्री अमन चौधरी, शोधार्थी (अंतरविद्याशाखायी स्कूल) ने अपना निजी अनुभव साझा करते हुए कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रोज़गार के क्षेत्र में अंग्रेज़ी भाषा को तरजीह दी जाती है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली युवा पर्याप्त ज्ञान और कौशल होने के बावजूद पिछड़ जाते हैं। सुश्री गरिमा सिंघल, शोधार्थी (विद्युत इंजीनियरी विभाग) ने कहा कि अपनी मातृभाषा में विद्या प्राप्त करना विद्यार्थियों का बेहतर बौद्धिक विकास करता है और उनका आत्मविश्वास बढ़ाता है। इसके बाद प्रो. आर. एस. सर्राजू ने कहा कि हमें भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करना होगा ताकि सीखने की राह में भाषा बाधा न बने। डॉ. गिरिधर राव ने भारत सरकार की भाषा संबंधी योजनाओं की जानकारी दी। सभी वक्ताओं की प्रस्तुति के पश्चात, अध्यक्ष, हिंदी कक्ष ने प्रस्तुत विचारों का सार सभी के समक्ष प्रस्तुत किया। प्रो. रंगन बनर्जी (निदेशक) ने वक्ताओं से शिक्षा में बहुभाषिकता के संबंध में सुझाव मांगे। इस क्रम में, सुश्री शुभांजली कोरी ने पीएच.डी. शोधार्थियों के लिए हिंदी में ऐब्स्ट्रैक्ट लिखने हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला के आयोजन का सुझाव दिया। तदुपरांत, निदेशक प्रो. रंगन बनर्जी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि हमें संस्थान में ऐसा माहौल बनाना होगा जो सभी विद्यार्थियों की भाषा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करे। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षण में बहुभाषिकता को शामिल करते हुए हम एक समावेशी दुनिया के

निर्माण की ओर अग्रसर हो सकते हैं। इसके बाद सभी वक्ताओं को प्रमाण-पत्र दिए गए और हिंदी अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ।

जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल और समझने योग्य बनाने के लिए संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग द्वारा एक अनूठी कॉमिक बुक का विमोचन

पदार्थ इंजीनियरी की दुनिया को हास्य, कहानी और जीवंत कला के माध्यम से जीवंत बनाने के लिए, संस्थान के पदार्थ विज्ञान और इंजीनियरी विभाग ने एक रचनात्मक पहल की है और अपनी तरह की पहली कॉमिक बुक-स्टाइल ब्रोशर का विमोचन किया है। DMSE- Delivering a Material Safari Experience' शीर्षक वाले कॉमिक के केंद्र में डी. एम.एस.ई. के नए मैस्कॉट और 'सूत्रधार' प्रो. पदार्थ हैं। इस रोचक कथा शैली के माध्यम से यह ब्रोशर जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल बनाने और वास्तविक दुनिया से उनके जुड़ावों को उजागर करने का प्रयास करता है, जिससे पदार्थ इंजीनियरी को प्रभावशाली और सहज रूप से समझे जाने योग्य

बनाया जा सके। कहानी में संस्थान की समानता, विविधता और समावेशन के लिए प्रतिबद्धता की सूक्ष्म झलकियाँ बुनी गई हैं।

प्रो. जयंत जैन, अध्यक्ष, पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग ने कहा, “इस कॉमिक पुस्तक की परिकल्पना STEM (STEM) के रोचक और मनोरंजक पहलुओं को प्रमुखता से सामने लाने के लिए की गई थी। पदार्थ इंजीनियरी एक अत्यंत रचनात्मक और प्रेरणादायक क्षेत्र है, और हम ऐसा माध्यम चाहते थे जो विद्यार्थियों के साथ-साथ गैर-तकनीकी पाठकों को भी समान रूप से आकर्षित कर सके। प्रो. पदार्थ के रोमांचक अभियानों के माध्यम से हम जिज्ञासा जगाने और हमारे संसार को आकार देने वाली सामग्री को समझने में छिपे उत्साह को दिखाने की आशा करते हैं।” इस पहल के नेतृत्वकर्ता प्रो. आर. लक्ष्मी नारायण, डी.एम.एस.ई. ने आगे कहा कि “इसके पीछे विचार यह था कि विद्यार्थी पदार्थों को ऐसी वस्तु के रूप में देखें, जिनके साथ वे प्रतिदिन रहते हैं और अनुभव करते हैं ताकि वे जो कार्य करते हैं वह अत्यधिक तकनीकी नहीं बल्कि पूर्णतः प्राकृतिक और तार्किक लगे। प्रो. पदार्थ की इस दुनिया की यात्रा एक नई काल्पनिक दुनिया होगी, जिसके माध्यम से हम अपने युवा पदार्थ वैज्ञानिकों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं।”

इस दृष्टि को साकार करने के लिए, ब्रोशर पर काम कर रहे डी.एम.एस.ई. के चार संकाय सदस्यों की एक टीम ने संस्थान के डिज़ाइन विभाग के पूर्व विद्यार्थी श्री प्रसेनजित चटर्जी के साथ सहयोग किया। चटर्जी ने एक आकर्षक, कॉमिक-बुक सौंदर्य के साथ वैज्ञानिक विचारों को जोड़ने के लिए दृश्य कल्पना, पात्रों और कहानी को आकार देने के लिए टीम के साथ मिलकर काम किया। डी.एम.एस.ई. कॉमिक बुक के इस पहले संस्करण के बाद, एक शृंखला के रूप में समय-समय पर अन्य कॉमिक बुक्स भी जारी की जाएँगी, जिनका उद्देश्य कला के माध्यम से विभाग, उसके शोध परियोजनाओं और शिक्षण कार्यों के मूल स्वरूप को दर्शाना है।

यह रचनात्मक पहल पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग के व्यापक मिशन का हिस्सा है, जिसमें विज्ञान को सुलभ, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और समावेशी तरीकों से संप्रेषित करना शामिल है। कॉमिक-स्टाइल ब्रोशर विभाग की नवाचारशील भावना और आने वाली पीढ़ी के पदार्थ इंजीनियर्स को प्रेरित करने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

कॉमिक- स्टाइल ब्रोशर का लिंक:

https://issuu.com/ultramarine/docs/comic_dmse_iitdelhi

हिंदी प्रशिक्षण: आभार अभिव्यक्ति

कविता

पाँच दिवस का यह ज्ञान-यज्ञ, अब पूर्णता की ओर बढ़ा,
हिंदी की इस कार्यशाला का, हम सबके मन पर गहरा रंग चढ़ा।
भव्य व्यवस्था, कठिन परिश्रम, समिति का समर्पण अनुपम,
निष्ठा को आपकी सादर नमन, जो रही निरंतर ही उत्तम।
यह मंच सजा, अवसर दिया, जिनका भी था यह पावन विचार,
हिंदी-कक्ष के सब स्वजनों का, कोटि-कोटि निश्चल आभार।
राजभाषा के गौरव को, हमारे मन मस्तिष्क तक पहुँचाने का
आभार तुम्हें, आभार तुम्हें!

संकल्प सारथी नीरज की दूरदर्शिता, डॉ. स्वाति का प्रयास प्रखर,
आपकी ऊर्जा के पारस से, महक उठा यह ज्ञान-शिखर।
तकनीकी ऊसर भूमि पर भी, राजभाषा का उपवन खिलाने का,
आभार तुम्हें, आभार तुम्हें!

इंद्रमणि जी का नेपथ्य प्रयास, पुरुषोत्तम जी का निरंतर संवाद
सुनीता जी और सुमित का समन्वय, देवेंद्र जी का अनुवाद
सच्ची लगन और कठोर परिश्रम से, इस कार्यशाला की पृष्ठभूमि बनाने का
आभार तुम्हें, आभार तुम्हें!

विषय-विशेषज्ञों का वंदन

नरेश जी के नीति-ज्ञान ने, नियमों का मार्ग प्रशस्त किया,
डॉ. वनिका की अभिव्यक्तियों ने, संवादों को नया अर्थ दिया।
ऋचा और डॉ. गौतम के संग, अनुवाद की सरिता बही,
रेखा जी की वर्तनी ज्ञान से, लेखन की अशुद्धियाँ नहीं रही।
प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्यों को, हिंदी में सहज बनाने का
आभार तुम्हें, आभार तुम्हें!

आशुतोष जी की शब्दावली से, शब्द-कोष हमारा समृद्ध हुआ,
ज्ञान के इस महायज्ञ में, हर मानस अब बुद्ध हुआ।
शशिकला की ऊर्जा ने, शब्दों में नया प्राण भरा,
वाक्यांश और अभिव्यक्तियों से, संवाद का मार्ग प्रशस्त करा।
राजभाषा की वैतरणी में हम सबको नहलाने का
आभार तुम्हें आभार तुम्हें!

स्नेहिल सत्कार (हास्य पुट)

खारा बिस्किट, मीठा बिस्किट, अनेकानेक पकौड़े थे,
टी-टाइम में ध्यान भटकता, फिर चाय की तरफ सब दौड़े थे।
पनीर-पुलाव, गुलाब जामुन, खिला-खिलाकर तृप्त किया,
व्रत में भी फलाहार देकर, सारे व्रतियों को भी संतृप्त किया।
पढ़ा खिला के, खिला पढ़ा के, डाइट की ऐसी तैसी करवाने का
आभार तुम्हें, आभार तुम्हें!

डॉ. संजय कुमार गुप्ता

उप तकनीकी अधिकारी, सिविल एवं पर्यावरणीय इंजीनियरी विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए
वर्ष 2026-2027 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	“क” क्षेत्र	“ख” क्षेत्र	“ग” क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 60% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की -बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं एवं सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना।	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सी.डी./डी.वी.डी., पेन ड्राइव तथा अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, जिनमें कंप्यूटर भी शामिल हैं, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%